विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ	क्रम	विषय	पृष्ठ
१	धवलाकारका मंगलाचरण	१		३ वेदनानामविधान	
२	वेदना अधिकारके अन्तर्गत अनुयोग-द्वारोंका निर्देश	१६		नैगमादि नयोंकी अपेक्षा वेदनाके भेद व उनका स्वरुप	१३
	१ वेदनानिक्षेप			४ वेदनाद्रव्यविधान	
	नामवेदना आदि चार प्रकारकी वेदनाका स्वरुप व उसके उत्तरभेद	५		वेदना-द्रव्यविधानके अन्तर्गत पदमीमांसा आदि ३ अनुयोगद्वारोंका निर्देश	१८
	२ वेदना-नयविभाषणता				
१	उपर्युक्त नामवेदना आदिमेंसे किस किस वेदनाको कौन कौनसे नय विषय करते हैं, इसका विवेचन	९	२	इन ३ अनुयोगद्वारोंके अतिरिक्त संख्या व गुणकार आदि अन्य ५ अनुयोगद्वारोंकी सम्भावनाविषयक शंका व उसका परिहार	१९

क्रम	विषय	पृष्ठ	क्रम	विषय	पृष्ठ
	पदमीमांसा	२०-३०		अन्तिम गुणहानिस्थानान्तरमें रहनेका कालप्रमाण	९८
३	पदमीमांसामें द्रव्यकी अपेक्षा ज्ञानावरणीय-वेदनाविषयक उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट आदि पदोंकी प्ररुपणा	२०		नारकभवके अन्तिम समयमें स्थित होनेपर ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट वेदनाका विधान	१०९
	शेष सात कर्मोंसे सम्बध्द उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट आदि पदोंकी प्ररुपणा	२९		संचित उत्कृष्ट ज्ञानावरणद्रव्यके उपसंहारकी प्ररुपणामे संचयानुगम भागहारप्रमाणानुगम और समय-प्रबध्दप्रमाणानुगम इन तीन अनुयोगद्वारोंमें संचयानुगमका निरुपण	१११
	स्वामित्व	३०-३८४			

स्वामित्वके उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट पदविषयक २ भेदोंका निर्देश ३०
उत्कृष्ट ज्ञानावरणवेदना ३१-२२४
६ बादर पृथिवीकायिक जीवोंमें अवस्थान ३२
७ उनमें परिभ्रमण करते हुए पर्याप्त भवोंकी अधिकता और अपर्याप्त भवोंकी अल्पताका निर्देश ३५
८ वहांपर पर्याप्त कालकी दीर्घता और अपर्याप्त कालकी हस्वताका उल्लेख ३७
तत्प्रायोग्य जघन्य योगसे आयुकेबांधनेका विधान ३८
अधस्तन स्थितियोंकेनिषेकका जघन्य पद और उपरितन स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद करनेका विधान ४०
बहुत बहुत वार उत्कृष्ट योगस्थानोंकी प्राप्तिका निर्देश ४५
बहुत बहुत वार बहुत संक्लेश रुप परिणामोंसे परिणत होनेका विधान

भागहारप्रमाणानुगम ११३-२०१
भागहारप्रमाणानुगममें प्ररुपणा आदि ६ अनुयोगोंकेद्वारा निषेक-रचनाका निरुपण ११४
मोहनीयकी नानागुणहानि शलाकाओंका प्रमाण ११८
२७ ज्ञानावरणीयादि अन्य कर्मोंकी नानागुणहानिशलाकायें ११९
२८ नानागुणहानिशलाकाओंका अल्प-बहुत्व १२०
आठ कर्मोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिका अल्पबहुत्व १२१
३० संदृष्टिरचनापूर्वक समयप्रबध्दके अवहारकी प्ररुपणा १२२
३१ भागाभाग व अल्पबहुत्वका कथन १४१
३२ चारित्रमोहनीयकी क्षपणामें आई हुई ८ वीं मूलगाथा सम्बन्धी चार भापगाथाओंमेंसे तीसरी भाप-गाथाकेअर्थकी प्ररुपणा १४३
३३ कर्मस्थितिकेद्वितीय समय-सम्बन्धी संचयका भागहार १४४
३४ तृतीय समयमें बांधे गये समय-प्रबध्दके संचयका भागहार १४७

४६

एकेंद्रियोंमें त्रसस्थितिसे रहित कर्मस्थिति तक परिभ्रमण करनेके पश्चात् बादर त्रस पर्याप्त जीवोंमें उत्पन्न होनेका उल्लेख ४६

१४ त्रसोंमें परिभ्रमण कराते हुए छह आवा-सोंकी प्ररुपणा ५०

१५ इस प्रकार परिभ्रमण करते हुए उसके अन्तिम भवमें सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न होनेका उल्लेख ५२

१६ वहांपर उत्कृष्ट योगकेद्वारा आहारग्रह-णादिका नियम ५४

१७ योगयवमध्यप्ररुपणामें प्ररुपणा-प्रमाणादि ६ अनुयोगद्वार ६१

१८ अनन्तरोपनिधामें अवस्थित-भागहारादि ४ भागहारोंकेद्वारा योगस्थानजीवोंका प्रमाण ६६

परम्परोपनिधामें प्ररुपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व इन ३ अनुयोगद्वारोंका उल्लेख ७४

२० अवहारकालकी प्ररुपणा ७६

२१ भागाभाग व अल्पबहुत्वका कथन

एक समय अधिक गुणहानि ऊपर जाकर बांधे गये समयप्रबध्दकेसचयका भागहार १६६

तीन समय अधिक गुणहानि ऊपर जाकर बांधे गये समयप्रबध्दकेसचयका भागहार १६९

दो गुणहानि मात्र अध्वान जाकर बांधे गये द्रव्यकेसचयका भागहार १६९

एक समय अधिक दो गुणहानिया जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार १७०

दो समय अधिक दो गुणहानियां जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार १७१

४१ तीन गुणहानियां जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार १७२

क्रम	विषय	पृष्ठ
४२	चार गुणहानियां जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार	१७५
४३	पांच गुणहानिया जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार	१७८
४४	उक्त भागहारकी अन्य प्रकारसे प्ररुपणा	१८१
४५	आबाधाकेभीतर बांधे गये समय-प्रबध्दोंके उत्कर्षण द्वारा नष्ट हुए द्रव्यकी परीक्षा	१९४
	ज्ञानावरणीयकी अनुत्कृष्ट द्रव्य-वेदनाका कथन करते हुए अनन्त भागहानि आदिका निरुपण	२१०
४७	गुणितकर्मांशिक, गुणितघोलमान, क्षपित-घोलमान और क्षपितकर्मांशिक जीवोंका आश्रय कर पुनरुक्त स्थानोंकी प्ररुपणा	२१६
४८	त्रस जीव योग्यस्थानों सम्बन्धी जीवसमुदा-हारकेकथनमें प्ररुपणा आदि ६ अनुयोगद्वार	२२१
४९	स्थावर जीव योग्य स्थानों सम्बन्धी जीवसमुदाहारकेकथनमें प्ररुपणा आदि ६ अनुयोगद्वार	२२३
	आयुको छोडकर शेष दर्शनावरणीय आदि ६	

क्रम	विषय	पृष्ठ
	आयु कर्मकी द्रव्यसे अनुत्कृष्ट वेदनाकी प्ररुपणा	२५५
	द्रव्यसे जघन्य ज्ञानावरणवेदनाकेस्वामीका स्वरुप (सूत्र ४८-७५)	२६८
६२	द्वीन्द्रियादि अपर्याप्त जीवोंमें उत्पत्तिवारोंका प्रमाण	२७०
६३	द्वीन्द्रियादि पर्याप्त जीवोंकी आयु-स्थितिका प्रमाण	२७१
	निगोद जीवोंमेंसे मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवोंकेकेवल सम्यक्त्व व संयमासंयमके ही ग्रहणकी योग्य-ताका उल्लेख	२७६
	गर्भसे निकलकेप्रथम समयसे लेकर आठ वर्षोकेवीतनेपर संयमग्रहण-की योग्यताका उल्लेख	२७८
६६	गर्भमें आनेके प्रथम समयसे लेकर आठ वर्षोंके वीतनेपर संयमग्रहण-की योग्यता विषयक आचार्यान्तरका अभिमत और उसकी असंगति	२७९
६७	गुणश्रेणिनिर्जराका क्रम	२८२
६८	भिन्न भिन्न पर्यायोंमें उत्पत्तिकेयोग्य मिथ्यात्वकालका अल्पबहुत्व	२८४

कर्मोंके उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट द्रव्यकी प्ररुपणा २२४
आयु कर्मकी द्रव्यसे उत्कृष्ट वेदनाका स्वामित्व २२५-२४३
महाबन्धके अनुसार ८ अपकर्षों द्वारा आयुको बांधनेवालोंके आयु-बन्धक कालका अल्पबहुत्व २२८
५२ सोपक्रमायु जीवोंमें परभविक आयुके बांधनेका नियम २२३
५३ निरुपक्रमायु जीवोंमें परभविक आयुका बन्धनविधान २३४
आठ व सात आदि अपकर्षो द्वारा आयु-को बांधनेवाले जीवोंका अल्पबहुत्व २३४
५५ योगयवमध्यके ऊपर रहनेका कालप्रमाण २३५
५६ चरम गुणहानिस्थानान्तरमें रहनेका कालप्रमाण २३६
५७ क्रमसे कालको प्राप्त हुए उक्त जीवके पूर्वकोटि आयुवाले जलचर जीवोंमें उत्पन्न होनेका नियम बतलाते हुए आयुबन्धकविषयक व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्रसे विरोधकी आशंका व उसका परिहार २३७
५८ उक्त जीवके अन्तर्मुहूर्तमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त होनेका नियम २३९
६९ संयमकाण्डकों, संयमासंयम-काण्डकों, सम्यक्त्वकाण्डकों और कषायोपशामनाकी वारसंख्या २९४
७० गुणश्रेणिनिर्जराका अल्पबहुत्व २९५
उपसंहारप्ररुपणामें प्रवाह व अप्रवाह स्वरुपसे आये हुए उपदेशों द्वारा प्ररुपणा अनुयोगद्वारका निरुपण २९७
ज्ञानावरण सम्बन्धी अजघन्य द्रव्यकी चार प्रकार प्ररुपणामें क्षपितकर्मांशिकके कालपरिहानि द्वारा उक्त प्ररुपणा २९९
गुणितकर्मांशिकके कालपरिहानि द्वारा अजघन्य द्रव्यकी प्ररुपणा ३०६
७४ क्षपितकर्मांशिकके सत्त्वके आश्रित अजघन्य द्रव्यकी प्ररू पणा ३०८
गुणितकर्मांशिकके सत्त्वाश्रित अजघन्य द्रव्यकी प्ररुपणा ३१२
७६ दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय सम्बन्धी जघन्य वेदनाकी प्ररुपणा ३१३
७७ उक्त तीन कर्मोंकी अजघन्य वेदना ३१४
७८ वेदनीय सम्बन्धी जघन्य वेदनाके स्वामीकी प्ररुपणा (सूत्र ७९-१०८) ३१६

५९ आयु कर्मकी द्रव्यप्रमाणकी परीक्षा रुप उपसंहारकी प्ररुपणा २४४	दण्ड, कपाट, प्रतर और लोकपूरण समुद्घातोंका स्वरुप ३२० ८० योगनिरोधका क्रम ३२२
क्रम विषय पृष्ठ	क्रम विषय पृष्ठ
८१ कृष्टिकरणविधान ३२३ ८२ वेदनीय सम्बन्धी अजघन्य वेदनाकी प्ररुपणा ३२७ क्षपितकर्मांशिकके सत्त्वका आश्रय कर अजघन्य द्रव्यकी प्ररुपणा ३२७ गुणितकर्मांशिकके सत्त्वका आश्रय कर अजघन्य द्रव्यकी प्ररुपणा ३२९ नाम व गोत्रके जघन्य एवं अजघन्य द्रव्यकी प्ररुपणा ३३० आयु कर्म सम्बन्धी द्रव्यके स्वामी की प्ररुपणा ३३० ८७ आयु कर्म सम्बन्धी अजघन्य द्रव्य वेद-नाकी प्ररुपणा ३३६ अल्पबहुत्व ३८५-३९४ ८८ जघन्य पद विषयक अल्पबहुत्व ३८५ ८९ उत्कृष्ट पद विषयक अल्पबहुत्व ३९०	९६ उनका सर्व परस्थान अल्पबहुत्व ४०६ ९७ उनका परस्थान अल्पबहुत्व ४०८ उपपाद, एकान्तानुवृध्दि और परिणाम योगोंका अस्तित्व ४२० ९९ उपर्युक्त अल्पबहुत्वोंकी संदृष्टियां ४२१ १०० कर्मप्रदेशोंका अल्पबहुत्व ४३१ १०१ योगस्थानप्ररुपणामें १० अनुयोग-द्वारोंका उल्लेख ४३२ १०२ योगके विषयमें नामादि निक्षेपों-की योजना ४३४ १०३ स्थानके विषयमें नामादि निक्षेपों-की योजना ४३४ १०४ योगस्थानप्ररुपणाके अन्तर्गत १० अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश और उनका क्रम ४३८ १०५ अविभागप्रतिच्छेदप्ररुपणा (१) ४३९

९० जघन्य-उत्कृष्ट विषयक अल्पबहुत्व ३९२	१०६ वर्गणाप्ररुपणा (२) ४४२
चूलिका ३९५-५१२	१०७ गुरुपदेशके अनुसार प्ररुपणा आदि ६ अनुयोगद्वारोंकेद्वारा प्रथमादि वर्गणाओं सम्बन्धी जीवप्रदेशोंका निरुपण ४४४
९१ योगका अल्पबहुत्व ३९५	१०८ स्पर्धकप्ररुपणा (३) ४५२
९२ योगगुणकारका निर्देश ४०३	१०९ अन्तरप्ररुपणा (४) ४५५
उक्त अल्पबहुत्वालापकेदेशामर्शक होनेसे उसकी प्ररुपणा प्रमाण और अल्पबहुत्व इन ३ अनुयोगद्वारोंकेद्वारा विशेष प्ररुपणा ४०३	११० स्थानप्ररुपणा (४) ४६३
९४ योगस्थानोंका अल्पबहुत्व ४०४	१११ अनन्तरोपनिधा (६) ४८०
९५ चौदह जीवसमासोंमें योगाविभाग-प्रतिच्छेदोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व ४०४	११२ परम्परोपनिधा (७) ४८८
	११३ समयप्ररुपणा (८) ४९४
	११४ वृध्दिप्ररुपणा (९) ४९७
	११५ अल्पबहुत्व (१०) ५०३
	११६ प्रदेशबन्धस्थानोंकी प्ररुपणा ५०